गंगा मैया से साक्षात्कार

- डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

1. प्रदूषण के संबंध में गंगा मैया ने क्या कहा है?

प्रदूषण के संबंध में गंगामय्या कहती हैं कि देश का वातवरण जब प्रदूषित हो गया तब वह कैसे बच सकती थी। लोग समझते हैं कि वे कैसे भी कर्म करें, गंगा मय्या उन्हें तार देंगी। प्रदूषण तो छूआछूत का रोग है। जनता को कष्ट देकर उसके शरण में आते हैं और उसके निर्मल जल को मलीन करते हैं।

2. समाज में कौन-कौन सी समस्याएँ बढ़ रही हैं?

गंगा मैया के अनुसार समाज में महंगाई, रिश्वतखोरी और पार्थिवकता जैसी समस्याएँ रोज बढ़ती चली जा रही हैं। इसका कोई अंत दिखलाई नहीं देता। धर्म का भी व्यापारीकरण हो रहा है। राजकीय क्षेत्र में नेता लोग आपस में ऐसे लड रहे हैं जैसे नगरपालिका के स्कूल की कक्षा एक के बच्चे।

3. गंगा मैया का कुर्सी से क्या अभिप्राय है?

गंगा मैया का कुर्सी से यह अभिप्राय है कि, कुर्सी का मतलब शक्ति है और शक्ति माने वैभव, धन, सम्मान, कीर्ती आदि। एक बार लोगों को अधिकार का स्वाद जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। ये छिन जाए तो व्यक्ति ऐसा भटकता है जैसे मजनू लैला के पीछे।

Scanned with CamScanner

III ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए: 2

१. 'वत्स, देश का वातावरण ही जब प्रदूषित हो गया तब मैं कैसे बच सकती थी ।'

पाठ का नाम– गंगा मैया से साक्षात्कार

लेखक का नाम: डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी ।

उपर्युक्त बातें गंगा मैया लेखक से कह रही हैं ।

विवरण: मकर संक्रांति के दिन लेखक इलाहाबाद में ही थे । गंगा मैया के निजी सचिव से दो मास पूर्व ही समय ले चुके थे। माँ मंदिर में विराज रही थी । चेहरे पर उदासी थी । लेखक जाकर

Scanned with CamScanner

माँ के चरण छुए। प्रश्न लिख कर ले गय थे। उन्होंने माताजी से पूछा कि कुछ विशेषज्ञ कह रहे हैं कि आप में भी प्रदूषण प्रवेश कर रहा है। गंगा मैया में तो वह शक्ति है कि प्रदूषण अपने आप समाप्त हो जाए। लेखक की इन बातों को सुनकर गंगा मैया ने लेखक से उपरोक्त बातें कहीं।

२. 'बेटा, शब्दकोशों में उसका नाम शेष है, उपदेशकों के प्रयोग में भी आ रहा है"।

पाठ का नाम– गंगा मैया से साक्षात्कार

लेखक का नाम: डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी।

इस वाक्य को डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित गंगा मैया से साक्षात्कार पाठ से लिया गया है। इस वाक्य को गंगा मैया लेखक से कह रहीं हैं। साक्षात्कार प्रदूषण संबंधी सवाल से शुरू होता है। चर्चा का विषय 'चरित्र का संकट' है। गंगा मैया कहती हैं कि चरित्र तो उसी का अंग। पर अब वह अतीत की वस्तु हो गया है। गंगा मैया द्वारा ढाढ़स बँधाने पर भी उसके आँसू कम नहीं हुए। वह दुखी था। जब लेखक गंगा मैया से पूछते हैं कि अब चरित्र भैया कहाँ है? मुस्कुराते हुए गंगा मैया कहती हैं कि चरित्र का नाम शब्दकोशों में शेष रह गया है और उपदेशकों के प्रयोग में भी आ रहा है। मास्टर लोग भी छोटी कक्षाओं में विद्यार्थियों को पढ़ाते समय कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

३. 'सेवाहि परमोधर्म' के स्थान पर लोग 'मेवाहि परमो धर्म' कहने लगे हैं।

पाठ का नाम– गंगा मैया से साक्षात्कार

लेखक का नाम: डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी।

उपर्युक्त बातें लेखक पाठकों से कहते हैं।

इस वाक्य को डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित गंगा मैया से साक्षात्कार पाठ से लिया गया है। लेखक आज के प्रदूषित समाज में धर्म के नाम पर होनेवाले ढकोसलों पर व्यंग्य किया है। लेखक गंगा मैया से पूछते हैं कि आजकल समाज में चरित्र का अस्तित्व देखने को नहीं मिल रहा है। इसका क्या कारण हो सकता है तब गंगा मैया कहती हैं कि सेवा करने से चरित्र बनता था। लेकिन सेवा रानी को भी मारकर जाने कहाँ भगा दिया। अब तो सब मेवा बटोरने में लग गए हैं। 'सेवाहि परमोधर्म' के स्थान पर लोग 'मेवाहि परमो धर्म' कहने लगे हैं।

४. 'एक बार जब जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता'।

पाठ का नाम– गंगा मैया से साक्षात्कार

लेखक का नाम: डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी।

उपर्युक्त बातें गंगा मैया लेखक से कह रही हैं।

इस वाक्य को डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित गंगा मैया से साक्षात्कार पाठ से लिया गया है।

Scanned with CamScanner

समाज का रहस्य या भेद खोलना लेखक का मुख्य उद्देश है । राजनीति के दलों की चर्चा की गई है । असली झगड़ा कुर्सी का है। कुर्सी का मतलब शक्ति और शक्ति माने अधिकार, वैभव, धन सम्मान, कीर्ति आदि है । एक बार लोगों को अधिकार का स्वाद जबान पे चढ़ जाए तो फिर कुछ अच्छा नही लगता । ये छिन जाए तो व्यक्ति ऐसा भटकता है जैसे मजनूं लैला के पीछे घूमता था।

५. 'पतन की जब पराकाष्टा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें फूटती हैं' ।

इस वाक्य को डॉ.बरसाने लाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित गंगा मैया से साक्षात्कार पाठ से लिया गया है । गंगा माँ लेखक से कहती हैं कि हरिजनों पर कैसे अत्याचार हो रहे हैं । मैंने तो अपनी गोद में सबको समान रूप से खिलाया, कभी भेद-भाव नहीं किया । ये मेरे कैसे भक्त हैं कि अपने ही भाई-बहिनों को मौत के घाट उतार रहे हैं । सब समस्याओं के बारे में प्रश्न पूछने के बाद लेखक पूछते हैं कि कैसे इस समाज का उद्धार हो सकता है तब गंगा मैया जवाब देती हैं कि प्रकृति सर्वशक्तिमान है । जब पतन अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच जाती है तब उत्थान रूपी किरणें फूटती हैं ।

Scanned with CamScanner